क्या बाइबल किसी महिला को नन या “बहन” बनने की अनुमति देती
है?

कई ईसाई संप्रदायों में, विशेष रूप से रोमन कैथोलिक कलीसिया में, “बहन” शब्द उस महिला के लिए प्रयोग होता है जिसने अपने जीवन को ईश्वर को समर्पित कर दिया है—अक्सर ब्रह्मचर्य, आज्ञाकारिता, और कभी-कभी गरीबी के व्रतों के माध्यम से। हालाँकि बाइबल में “नन” या “बहन” जैसे आधुनिक शीर्षक स्पष्ट रूप से नहीं मिलते, फिर भी पवित्रशास्त्र इस विचार को समर्थन देता है कि कोई व्यक्ति स्वेच्छा से ईश्वर के राज्य के लिए अविवाहित जीवन चुन सकता है।

एक महत्वपूर्ण पद इस विषय पर है:

1 कुरिन्थियों 7:34–36
“और अविवाहिता और कुँवारी स्त्री प्रभु की बातों की चिन्ता करती है, कि शरीर और आत्मा दोनों से पवित्र हो; पर जो विवाहिता हो वह सांसारिक बातों की चिन्ता करती है, कि अपने पति को कैसे प्रसन्न करे।
मैं यह तुम्हारे ही लाभ के लिये कहता हूं, न कि तुम पर बन्धन डालने के लिये; परन्तु इसलिये कि तुम्हारी भली चाल बनी रहे, और तुम बिना विचलित हुए प्रभु की सेवा करो।

पर यदि कोई समझता है कि वह अपनी कुँवारी के साथ अनुचित
व्यवहार करता है, यदि वह युवती हो गई हो, और ऐसा ही होना
अवश्य है, तो वह जो चाहता है, करे; वह पाप नहीं करता: उन्हें विवाह कर लेना चाहिए।”

यह वचन दिखाता है कि पौलुस अविवाहित जीवन को एक सम्मानजनक और आत्मिक मार्ग मानता है—बशर्ते वह निर्णय व्यक्ति की स्वेच्छा से, सही कारणों से लिया गया हो। यदि कोई महिला विवाह न करने का निर्णय इसलिए लेती है ताकि वह पूरी तरह से परमेश्वर की सेवा कर सके, तो वह बाइबिल सिद्धांतों के अनुरूप चल रही है। पौलुस यह भी स्पष्ट करता है कि यह निर्णय बाध्यता से नहीं लिया जाना चाहिए, और यदि किसी को विवाह करने की आवश्यकता महसूस होती है, तो वह कोई पाप नहीं है।

हालाँकि, यह ध्यान देना ज़रूरी है कि पौलुस ने अविवाहित रहने का आदेश नहीं दिया। उन्होंने इसे उद्धार या आत्मिक श्रेष्ठता से नहीं जोड़ा। इसके बजाय उन्होंने इसे एक वरदान कहा:

1 कुरिन्थियों 7:7
“मैं चाहता हूं, कि सब मनुष्य मेरी नाईं ही हों; परन्तु हर एक
को परमेश्वर का अपना-अपना वरदान मिला है: किसी को ऐसा, और
किसी को वैसा।”

साथ ही, बाइबल विवाह को मना करनेवाली धार्मिक व्यवस्थाओं के विरुद्ध चेतावनी भी देती है:

1 तीमुथियुस 4:1–3
“परन्तु आत्मा स्पष्ट रूप से कहता है, कि आनेवाले समय में
कुछ लोग विश्वास से भटक जाएंगे, और भटकानेवाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं की ओर ध्यान देंगे।
ऐसे लोग कपट से झूठ बोलते हैं, और उनका विवेक मानो गरम लोहे
से झुलस गया है।
वे विवाह करने से मना करते हैं, और उन पदार्थों से दूर रहने
को कहते हैं जिन्हें परमेश्वर ने विश्वासियों और सत्य को पहचानने वालों के लिये धन्यवाद के साथ ग्रहण करने के लिये उत्पन्न किया है।”

यहाँ पौलुस उन लोगों की आलोचना नहीं कर रहे जो व्यक्तिगत रूप से ब्रह्मचर्य का चुनाव करते हैं, बल्कि वे उन धार्मिक व्यवस्थाओं और नेताओं की निंदा कर रहे हैं जो इसे अनिवार्य बनाते हैं – विशेष रूप से तब जब इसे आत्मिक नेतृत्व या परमेश्वर की कृपा पाने की शर्त बना दिया जाता है। यह तब खतरनाक हो जाता है जब किसी व्यक्ति की आंतरिक इच्छा की अनदेखी कर, बाहरी व्यवस्था से उसे दमन में डाला जाए।

थियोलॉजिकल सारांश:

परमेश्वर की सेवा के उद्देश्य से स्वैच्छिक अविवाहित जीवन जीना बाइबिल में समर्थित है (1 कुरिन्थियों 7:34–35)।

जब ब्रह्मचर्य को धार्मिक अनिवार्यता बना दिया जाता है, तो बाइबल इसका विरोध करती है (1 तीमुथियुस 4:3)।

अविवाहित रहना एक वरदान है (1 कुरिन्थियों 7:7), न कि कोई थोपे जाने योग्य नियम।

यदि कोई महिला पूर्ण रूप से परमेश्वर को समर्पित जीवन जीने के लिए विवाह न करने का निर्णय लेती है—जैसे कि “बहनें” या नन—तो यह बाइबिल के विपरीत नहीं है, जब तक यह निर्णय ईमानदारी से, बिना किसी दबाव के, और किसी आत्मिक पद प्राप्ति की इच्छा
के बिना लिया गया हो।

परमेश्वर आपको आशीष दे।

□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□ “□□□” □□□□ □□ □□□□□□ □□□□
□□?

Share on:
WhatsApp